

DPN 6515

चतुष्षष्टी सम्बरस्तोत्र / CATUṢṢAṢṬHĪSAMBARA STOTRA

Title :

Run. No. 7240

Cat. No.

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha ✓

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 23.5 x 9.2

Folios 9

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor ✓

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon : इति श्रीसम्बरशगमतन्त्रे अमृताभर्वेलोचनसम्बोद
श्रीचक्रसम्बरशदि चतुष्षष्टी सम्बरस्तोत्रं समाप्तः ॥

→ ॥ चतुष्षष्टी सम्बरस्तोत्र पुस्तक ॥ लिखितं ज्योतिर्वज्रपुत्रेण

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

30

१०३६

०१।८३३१४

००४
०००९

श्री

॥ चतुर्वर्धनस्य वसन्तपुष्पक ॥
॥ लिखितं श्रीनिवासपुष्प ॥

१०३६
०१।८३३१४
००४
०००९

०३।८३३१४
०१।८३३१४
००४
०००९

१३५

सं १ॐ नमः श्रीसुखराय ॥ सुखराय नमस्तुल्यं कायाय नमः ॥ चक्रुः सिताय नमः ॥
 चक्रुः सुखराय नमः ॥ १ ॥ भववकु नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ महाक्रांतस्व
 २ पायमय सुखराय नमः ॥ २ ॥ अश्विननाय नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ ३ ॥
 पुदागाय अश्विननाय नमः ॥ ३ ॥ कृष्णनाय नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ ४ ॥
 नमो देवाधिदेवाय कृष्णनाय नमः ॥ ४ ॥ व्याघ्राय नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ ५ ॥

६ नमः ॥ सुखराय नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ ६ ॥ मत्स्यवकु नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ ७ ॥
 हितायवे ॥ नमो नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ ८ ॥ सकलाकायवकु नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ ९ ॥
 धनायवे ॥ मनीषायाय नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ १० ॥ उद्युक्त महादेव भक्तिस्त्रयि ॥ ११ ॥
 कुनायवे ॥ मिथुनाय नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ १२ ॥ गजाननं नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ १३ ॥
 लिरु नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ १४ ॥ नमो देवाधिदेवाय नमस्तुल्यं भक्तिस्त्रयि ॥ १५ ॥

लाकभयनमः॥ भक्ति युक्ताय दवाय मधुकवकुमनमः॥ १० ॥ अहिवकु न
 मावाग्रयमिनिन्यनगायच॥ नमस्तुदवदवम अहिसम्बनमः॥ ११ ॥ भूकान
 नायदवाय दवाकाकाकाज (भक्तिगं) नमानमस्तु हीमाकुंभकसम्बनमः॥ १२ ॥ ॥ २ ॥
 सम्बगायनमस्तु भुक्ति युक्ताय नमः॥ सिंहाननाय नगुल्यं सिंहसम्बनमः॥ १३
 मर्कटानननगुल्यं भक्ति सम्बनगाय॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमः॥ १४ ॥ ॥ ॥

वकु नमस्तु भुक्ति सम्बनकायक॥ नमस्तु रगवन्दवम्ब नमस्तु नमः॥ १५ ॥ व
 नाहास्यपत्रभनरगकीउनकायक॥ नमामि भक्ति युक्ताय दवाकिसम्बनमः॥ १६ ॥
 ऊम्बकास्याय दवाय भक्ति जालिकुनायक॥ सर्वपापहनाय नमिवासम्बानमः॥
 १७ ॥ गधुवकु नमस्तु दुइखनाभयनमः॥ दवाकाय सिद्धिदहाय गधुसम्बनमः॥
 १८ ॥ काकाननाय भुक्ति दवाकाननय धामिनि॥ नमस्तु रगवन्दुल्यं काकसम्बनमः॥

उल्लवकुमनुत्यं महाशेख्यपुदायच ॥ यागिनीमथ कुरुदवं उल्लकसुम्वनमनम ॥
 ॥ २० ॥ नाक्षाननायमनुत्यं नाविधत्तसागवं ॥ नमस्तुत्यं नमस्तुत्यं नमस्तुत्यं ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥ गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं ॥ २३ ॥
 नमस्तुत्यं ॥ २४ ॥ गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं ॥ २५ ॥
 नमस्तुत्यं ॥ २६ ॥ गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं ॥ २७ ॥
 नमस्तुत्यं ॥ २८ ॥ गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं ॥ २९ ॥
 नमस्तुत्यं ॥ ३० ॥ गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं गभवकुयनमस्तुत्यं ॥ ३१ ॥

सुम्वनमनम ॥ २४ ॥ विदालवकुमनुत्यं मयकुलुचकीतिर्न ॥ अद्यायधमममय
 मार्जालसुम्वनमनम ॥ २५ ॥ मल्लवकुमनुत्यं मयकुलुचकीतिर्न ॥ अद्यायधमममय
 वदवर्धभरुसुम्वनमनम ॥ २६ ॥ सिद्धायसिद्धयूपायगुणायगुणवर्त्तिन ॥ यम
 पयायमनुत्यं कोरसुम्वनमनम ॥ २७ ॥ उल्लाननायभुद्धाय उल्लमायनमानम ॥
 उग्रयहीमवकुय उल्लकसुम्वनमनम ॥ २८ ॥ हंसवकुमनुत्यं हंसवकुमनुत्यं

१५॥ हं सु सु सा हे स्व नू या य हं सं सम्व ज न न म ४॥ २६ ॥ मृग व कु य भ न न म मि प य म भ
 यं ॥ म द्वि सि दि प्र दा ना यं मृ ग सु म्व ज न न म ४॥ २७ ॥ अ कि य क न म सु गु च कु वा क म् खा य
 वे ॥ न मा न म सु लो क र्ण च कु वा का न ना य च ॥ ३१ ॥ अ ज्ञा न ना य वी ना य अ वि द्या ना भि ॥ ४॥
 न न म ४॥ अ प व र्ण वि ना भ य अ ज्ञा न ना य न म ४॥ ३२ ॥ कृ कृ टा स्ता य द वा य क ल वृ
 द्वि क ना य च ॥ कौ तु क भ य न गु र्ण कृ कृ ट सु म्व ज न न म ४॥ ३३ ॥ कृ कृ सा न सु व का य

न म सु क र्म सं र व ॥ का ल ना भ य द वा य न न सु म्व ज न न म ४॥ ३४ ॥ मू खा न ना य य र्ण
 य ह्ना न दा य न मा न म ४॥ स र्व दे त्य वि ना भ य मू ख सु म्व ज न न म ४॥ ३५ ॥ क था न व
 कु र्ग गु र्ण द्वा त्पा कृ भ क व स्त्रि म ॥ न म सु म हा वी ज क था न सु म्व ज न न म ४॥ ३६ ॥ सा ल
 का स्य न म सु गु सा न द व य द न म ४॥ सि दि दं वृ द्वि दं द वं सा ल क सु म्व ज न न म ४॥ ३७ ॥ अ
 ग दं भु त दं द वं मा क दं ध न दं य जं ॥ न मा मि द व नू भ र्ण ह सु म्व ज न न म ४॥ ३८ ॥

चिह्नवक्त्र नमस्तु नमस्तु मेधनमस्तु ॥ नमस्तु युगभा नमस्तु उगत्तु गन्तु नमस्तु युग
 अधीर्भक्तकसम्बन्धनमस्तु ॥ ४० ॥ सावसास्यनमस्तु लं नमस्तु गृहसागजं ॥ नमस्तु
 गवमस्तु साप्रसुसम्बन्धनमस्तु ॥ ४१ ॥ खंडनास्यायदवाय महादवायवेनमस्तु ॥ ४२ ॥
 निर्वक्ष्यपददातायस्वप्नमीर्नमानमस्तु ॥ ४३ ॥ स्वमकर्ष्यायनमस्तु युगमेकमुक्तिमुक्तिपदा
 यम ॥ नमस्तु गवमस्तु दवंस्वमकर्ष्यायनमस्तु ॥ ४४ ॥ भक्तकास्यनमस्तु नमस्तु गवमस्तु

क
 ध्वजं ॥ कर्मपुदायनमस्तु लं नमस्तु भक्तकसम्बन्धनमस्तु ॥ ४४ ॥ रत्नकवक्त्रमस्तु
 लं नमस्तु कीर्णपनायन ॥ कार्यासिद्धिपुदायनरत्नसम्बन्धनमस्तु ॥ ४५ ॥
 पिकास्यायनमस्तु लं मंत्रसिद्धिकर्तायन ॥ विलांकभक्तिसर्वायपिकसम्बन्धन
 नमस्तु ॥ ४६ ॥ वक्त्रवक्त्रविलांकभक्तियुक्तगम्भाधियं ॥ नमस्तु दिववीजं
 चवक्त्रसम्बन्धनमस्तु ॥ ४७ ॥ स्वमीवक्त्रायदवायनभक्त्या नमानमस्तु ॥ नमस्तु

॥ ४६ ॥ कर्कटस्य नमस्तु नमः ॥ संसावहनव ॥
 पापपुत्रं नमः ॥ ४७ ॥ अलंकीवकुं नमः ॥ सर्वदायनिवात्रि
 ॥ ४८ ॥ संसावपाअनाअयठ ॥ अलंकीसुम्वनं नमः ॥ ४९ ॥ वृद्धिकास्य नमस्तु वनदमद ॥ ५० ॥
 मनमः ॥ नमानमस्तु वायनभावृद्धिकसुम्वनं ॥ ५१ ॥ अलंकीवकुं यदवायअ
 लिमादायनमः ॥ अलिमाकविनाअयअलिमस्वयनमः ॥ ५२ ॥ अ

हाकास्य नमस्तु अनाहकतायव ॥ अयअदकुतायचआहकसुम्वनं नमः ॥ ५३ ॥
 चमगोवकुं नमस्तु चानुर्यरुलदायनी ॥ चतुर्वर्गप्रदंदवचमगीसुम्वनं नमः ॥ ५४ ॥ सि
 विपूष्कनमस्तु सिद्धिं लदायन ॥ नमाहगवगचाप्रतिप्रसुम्वनं नमः ॥ ५५ ॥ अ
 भावकुं नमस्तु नमस्तु हीमधिकम ॥ नमस्तु हीमनग्राय ॥ अभासुम्वनं नमः ॥ ५६ ॥
 चकाग्रास्यपमं भूवं चोचल्यदीयतामकं ॥ नमाहगवगनुलं चकागसुम्वनं नमः ॥ ५७ ॥

॥ अधिकावक्रान्तुल्यं भृशं संहायका निष्पत्तिः ॥ नमस्तु पद्मानन्द ॥ अधिकास्तु स्वर्गं नमः ॥
 ॐ ॥ मधुपदिके वक्राय नमस्तु मानदायक ॥ सर्वज्ञाय पद्मभयमस्तिकास्तु स्वर्गं न
 मः ॥ ॐ ॥ पद्मवक्रान्तुल्यं पद्ममर्धं नमस्तु ॥ दिव्याय दिवसं भयनमः ॥ पद्मवक्रस्तु
 स्वर्गं ॥ ॐ ॥ नमस्तु वक्राय दवाय नमस्तु कर्णाय नमः ॥ नानाभूषणं वन्द्यं नमस्तु वन्द्यं नमः
 मः ॥ ॐ ॥ भृशं रूपं जगद्गमस्तु जगत्सर्वं नमस्तु ॥ नमानमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु

मः ॥ ॐ ॥ स्त्रियुपायदवाय गन्धाय गन्धवर्तिन ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 स्वर्गं नमस्तु ॥ ॐ ॥ संहाय सर्वलोकस्य कर्णाय पद्ममर्धं नमस्तु ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 मः ॥ प्रलयस्तु स्वर्गं ॥ ॐ ॥ श्रान्तिके पद्मं नमस्तु जगदीश्वरं ॥ पद्मास्तु पद्मं नमस्तु
 नमस्तु ॥ ॐ ॥ श्रान्तिके पद्मं नमस्तु ॥ ॐ ॥ श्रान्तिके पद्मं नमस्तु ॥ ॐ ॥ श्रान्तिके पद्मं नमस्तु
 नमस्तु ॥ ॐ ॥ श्रान्तिके पद्मं नमस्तु ॥ ॐ ॥ श्रान्तिके पद्मं नमस्तु ॥ ॐ ॥ श्रान्तिके पद्मं नमस्तु

५४

किं कंयुष्ठं तस्या वापुश्चाश्ममातृपुत्रादिमांसाणां कंयार्थिलतमकं न्याधनाथीलितम
चनं विद्यार्थिलतमविद्यामाहार्थिमाहमाप्रयात॥ ७७ ॥ वधीकनर्षचउच्चातं मा
जर्षमाहसुम्ननं ॥ आकर्षर्षवविद्वयं भगुर्वदिं रसायणी ॥ ७८ ॥ गृठिकापादका ॥ ७९ ॥
सिद्धिस्वप्नसिद्धिर्नयेवच ॥ खचमीसिद्धिविद्याकं मनुसिद्धिश्च वाक् ॥ ८० ॥ पमकायपु
वर्षश्च दुव्याकर्षर्षमवच ॥ लतमहागुमाऊनसत्यं सत्यं मयादिनं ॥ ८१ ॥ इति हं वाप

दमाठकृष्णभतमाप्रयात॥ अनिवृष्टावनावृष्टो माहामागीसमूहवतानरमा
अनुक्तकाननमस्तुमिक्तवधनदयगाकलहचविवादवपठनकागुमूकमम
॥ ८२ ॥ रिक्तकानां सरुमूलादुलादानं कनं रुलं ॥ वहुनाशकिमूकं नववृत्ताधु
दानजरुलं ॥ ८३ ॥ मधुनिधीसम्बन्धममनुमूकताएवेलाचसन्वादशीच
कसम्बन्धादिचतुर्वर्षीसम्बन्धकागुं समाक ॥ ८४ ॥

[illegible]